छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह
भिनसार
मुकुंद कौशल

* भिनसार *

(छत्तीसगढ़ी काव्य संग्रह)

मुकुंद कौशल

विशान्त प्रकाशन दुर्ग (मध्यप्रदेश)

□

संस्करण :

प्रथम १९८९

□

कापीराइट :

मुकुंद कौशल

□

मूल्य :

सात रुपये

□

प्रकाशक :

दिशान्त प्रकाशन

एम आई जी सी-५१६

पद्मनाभपुर

दुर्ग (मध्यप्रदेश) ४९१००१

○

मुद्रक :

रेजीमेन्टल, प्रेस दुर्ग

□

आवरण :

मोहन गोस्वामी

BHINSAAR : CHHATTEESGADHEE POEMS

BY : MUKUND KAUSHAL 7-00

उन मन बर

जेखर पछीना

महकत हे चन्दन कस,

धुर्रा ला घलो

जऊन मन

माथ मां चुपरथें

चन्दन कस

–प्रकाशक के गोठ

पाठक मित्रों,

छत्तीसगढ़ी रचनाकारों की बुनियादी समस्या है प्रकाशन । रचनाएँ प्रकाशित न हों, तो पाठको तक वे पहुचेंगी कैसे ? और फिर दृश्य:श्रव्य माध्यमों के आक्रमण ने तो पाठकों से उनका पढ़ने का समय भी हड़प लिया है । कागज मंहगें हो चले है, छपाई भी सस्ती नही, ऐसी परिस्थिति में अधिक पृष्ठों के काव्यसंग्रह का प्रकाशन आसान कहाँ है ?

हमने परिपाटी तोड़ी है ।

यह संग्रह आपका अधिक समय भी नहीं लेगा । एक ही प्रवाह में इसे पढ़कर आप कवि के स्वर से अपना वैचारिक तादात्म्य स्थापित कर पायेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है ।

हमें प्रतीक्षा रहेगी, आपके बहुमूल्य सुझावों की, आपकी महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं की ।

लिखेंगे न ? –प्रकाशक

दिशान्त प्रकाशन
एम आई जी
सी ५१६ पद्मनाभपुर
दुर्ग (मध्यप्रदेश) ४९१००१
दूरभाष – ३२४६

पानावारी

सूरुज हर खाँसत हे

अंगरा कस घाम हही
ओदरत हे आगी जस
कते तनी चिलमे हे छाँव ।
मोर भइया रे
अऊ कतका दुरिहा हे गाँव ?

राज भवन परजा के
मोटरा हे करजा के
बाढ़ी मा ले ले के —
कतका दिन खाँव
मोर भइया रे
अऊ कतका दुरिहा हे गाँव ?

लऊठी हे खाए घर
कुरिया, ओदराए घर
हाथ — मन चिंगारी धर
दऊड़े बर पाँव
मोर भइया रे
अऊ कतका दुरिहा हे गाँव ?

सूरुज हर खाँसत हे
अँधियारी हाँसत हे
काँटा कस गड़त हवै
अब अपने नाँव
मोर भइया रे
अऊ कतका दुरिहा हे गाँव ?

□

बनिहार के बिहान

कर दे मुनादी भरी गांव में
अब बिहान हो गे बनिहार के ।
नांगर हे जेखर जेखर खांध में
मालिक हे खेती अऊ खार के ।।
खा लौ रे बाँट – बाँट
मया के कौरा ला
मूड़ तुम नवा लौ रे
मिहनत के चौंरा ला
रात के पहावत ले काल बर –
परघौनी करबोन भिनसार के ।
चुहके हे जऊन – जऊन
जिनगी भर ये तन ला
चीन्हे कम लागथे
वो मुहरन हम मन ला
ये तोपे चेहरा ला आज तो
संगी मन देख लौ उघार के ।
कथनी अऊ करनी
जेखर ऊटपटांग हे
तरि ऊहर कोलिहा
अऊ बघवा मतांग हे
धर देबोन अइसन सब दुमुहां के –
ये नकली मंडरी उतार के ।
कऊनो नई पाबै अब
फोकट के जांगर ला
गढ़े हवन जुर मिल के
ममता के नांगर ला
कहि देथन, आज ले बिगारी ला –
कऊनो हर देख लए तियार के ।

गाँव के लचारी

ग़ज़ल

काखर तिर गोहराई गाँव के लचारी
काखर तिर छाती के घाव ला उघारी

पसिया ला पी के हम चावत हन गोंधा
लबरा मन झड़कथें रात दिन सोंहारी

हमर घर तो कमती हे रासन के कोटा
आने घर खुल्ला हे देस के दुवारी

घर–घर मेछरावत हें पीतर अऊ जरमन
मूड़ला खजुवावत हे फलकंसिया थारी

सरकारी दफ्तर मां गांधी के फोटू
सूरा के मुंहू मां जस लीम के मुखारी

देस अऊ बिदेस मं बगरत हे कला कौसल
पानी बर तरसत हे भइया महतारी

O

धर ले कुदारी

धर ले रे कुदारी गा किसान
आज डिपरा ला खन के डबरा पाट देबोरे ।

ऊँच - नीच के भेद ला मिटाएचच बर परही
चलो चली बड़े बड़े ओदराबोन खरही
जुरमिल गरीबहा मन, संगे मां हो के मगन
करपा के भारा-भारा बाँट लेबो रे ।
आज डिपरा ला खन के डबरा पाट देबो रे ।

चल गा पंडित, चल गा साहू, चल गा दिल्लीवार
चल गा दाऊ, चलो ठाकुर, चल न गा कुम्हार
हरिजन मन घलो चलो दाई - दीदी मन निकलो
भेदभाव गड़िया के पाट देबो रे ।
आज डिपरा ला खन के डबरा पाट देबो रे ।

जाँगर पेरइया हम हवन गा किसान
भोम्हरा अऊ भादों के हवन गा मितान
ये पड़त पथरा बन हितवा ला अपन हमन
गाँव के मियानी बर छाँट लेबो रे ।
आज डिपरा ला खन के डबरा पाट देबो रे ।

जिनगी के रद्दा

जिनगी के रद्दा अड़बड़ लम्भा हे ठिन हमरे चरन
गोड़ ला कहाँ – कहाँ हमन धरन
चले पुरवहिया सनन सनन ।

बिजहा रे डारेन नांगर चलाएन
धाने के नेवता मां बादर ला बलाएन
किजर - किजर के बरसो रे बादर तुंहरे पंइया परन
सावन भादों मां ठंऊका रे बरसिस पानी झनन झनन
चले पुरवहिया सनन सनन ।

अगहन मां बड़ें रे बिहनिया नहाएन
धाने लूएन करपा ला बांधिके ले आएन
मन हर चिरई असन फुदकै अऊ नाचें भुंइया मगन
ब्यारा मां बइला मन दंऊरी फंदाए दंऊदैं धनन धनन
चले पुरवहिया सनन सनन ।

धाने ला बेंचे बर जावत हवन मंडी
कऊनो ओढ़ें कथरी ते कऊनो ओढ़ें अंडी
कऊनो हे छोंडय ददरिया तैं कऊनो बपुरा हे गावथें भजन ।
गाड़ा के बइला के टोटा के घन्टी हे, बाजे टनन टनन
चले पुरवहिया सनन सनन ।

भइया के बिहाव माढ़िस खोजी खोजी
पुतरा असन भइया, पुतरी कस भऊजी
रात दिने भइया हुहुर - दुहुर भऊजी मुसकावैं हो के मगन
भऊजी के सांटी हे छम छम बोलै चुरी बाजै खनन खनन
चले पुरवहिया सनन सनन

✿

लीम के डंगाली

लीम के डंगाली चघे हे करेला के नार
इतरावथे लबरा बादर, घेरी बेरी नाचै रे बीच बजार
ये मिठ लबरा हा।
ठगुवा कस पानी ह ठगै अऊ मूड़ धरे बइठे किसान।
ये हो भइया गा मोर, कइसे बचाबो परान॥
एक बछर नांगर अऊ बइला ला बोर बोर,
ओरिया अऊ छान्ही ले पानी ह गली खोर,
खपरा बीच बोहावै ना ये भाई खपरा बीच बोहावय।
रदरद - रदरद रोंठ - रोंठ रेला मन,
बारी के सेमी बरबट्टी करेला मन,
लुहुर - टुहुर धाँय - धुपन जावय नां
ये भाई लुहुर टुहुर धांय धुपुन जावय।
ये हो भइया गा मोर, पूरा के बड़ नुकसान।
ये हो संगी गा मोर कइसे बचाबो परान॥
लागे नोटप्पा कस एगों के सावन में,
गोड़ जरै भोम्हरा कस भादो के नहावन में.
दुब्बर बर दूअसाढ़ ना ये भाई दुब्बर बर दू असाढ़।
बीजहा भुंजावै रे खेत ह सुखावै रे
लइकन अऊ महतारी जम्मों रोबियावै रे
अंगरा मां ठाढ़े ठाढ़े ना ये भाई अंगरा मां ठाढ़े ठाढ़े।
ये हो भइया गा मोर काबर रिसाए भगवान
ये हो संगी गा मोर, कइसे बचाबो परान।
विधि के विधाने मां परबस के माने मां,
धाने के पाने अऊ संझा बिहाने मां,
कीरा के पीरा समागे ना ये भाई कीरा के पीरा समागे।
सांस के समोना अऊ जिनगी के दोना में,
माहू के रोना अऊ बदरा के टोना में,
जम्मो किसानी नंदागे ना ये भाई जम्मो किसानी नंदागे।
ये हो भइया गा मोर पीरा हर होंगे जवान।
ये हो संगी गा मोर कइसे बचाबो परान।

✿

कहाँ लुकागे मांदर

का होगे मोर मुलुक ला भइया कइसन घपटे बादर।
कहाँ गंवागे बंसी सेखर कहाँ लुकागे मांदर ॥

सबो कती झगरा झाँसा हर अपनेच्च घर मां बाढ़े
तिड़ी-बिड़ी छान्ही परछा सब छरीं-दरीं माढ़े
    अइसन लागत हवै गरीबहा मन के भाग नंदागे
    आजादी के बदला परबस गाड़ा तरि फंदागे
राजकाज ला लकवा धर लिस कोढ़िया होगे जांगर
कहाँ गंवागे बंसी सेखर कहाँ लुकागे मांदर ॥

हेंऊला भर के आंसू रहि गे चिमटी भर के हांसी
परजा के मुरहा टोंटा मां मंहगाई के फांसी
    बोमिया-बोमिया के गोहरावन केंदर केंदर के रोवन
    कतेक मोहाटी मन मा हम अंसुअन के बिजहा बोवन
आगी लगए लिखइया मन ला हमर भाग के आखर।
कहाँ गंवागे बंसी सेखर कहाँ लुकागे मांदर ॥

हमर देंहला कांव-कांव के ये धोंविया मन घोंथय
करजा बोड़ी के बियाज मां टिप-टिप लहू निचोंथय
    कऊनो तीरत रथे निगोटी कऊनो झटकत रोटी
    गिधवा मन कस नाम ला नोंचै कंऊवा मन कस बोटी
हमला पाछू मां ढंऊड़ा के अपन हे रेंगे आगर।
कहाँ गंवागे बंसी सेखर कहाँ लुकागे मांदर ॥

काए करन, जब चारों मूड़ा जरए जुलुम के आगी
सहत जाए मां नंई बांचै भइया कऊनो के पानी
    काली के खातिर हम मन ला अब सोंचे बर परही
    तभे हमर हितवा बन करके नवां बिहान उतरही
ओ दिन धरबो हाथ मां हँसिया खांध मा धरबो नांगर।
कहाँ गंवागे बंसी सेखर कहाँ लुकागे मांदर ॥

✿

चिन्हारी हितवा के

सुन ले मोर भाई, सुन ले मोर भइया–
अइसन मां होगे मोर देस के कल्यान, नइ बाँचै रे परान ।
कोन अपन हवय कोन हवय रे बिरान, पहिचान ले मितान ॥

दुनिया ले पहिली कस मनखे सिरागे
नदिया के धार भरे भादो मां थिरागे
मोती के का कहिबे मिलय नहीं घोंघा
टिपटिप ले बुड़े लागिस जिनगी के डोंगा

सुख्खा हे नहीं मां ईमान के रे तरिया ।

पढ़ लिख के लइका हर खेत ला भुला गे
ददा ओखर नेतागिरी मां बोहागे
चाँदी कस उज्जर मन कर पारिस करिया
इज्जत के कर डारिस चेंदरी कस फरिया

गाँव ले भगाके इन ननथें सहरिया ।

ढेकना, गरीबहा के बने हवय नेता
मनखे के दुस्मन ले परे हे सपेटा
गाँव घर मां अप जस अऊ बाहिर बजरंगा ।
पइसा मां माते हे छोकरा लड़धंगा

बाहिर ले हरियर अऊ भितरी मां परिया

दारू के ब्यारा मां दंग–दंग ले खरही
तबले गइया ओखर मरही के मरही
रंग–बंग ले सीजर के धुंगिया उड़ाय
पोंप पोंप मोटर के पोंगा बजाए

बंगला मां बइठ के इन गावथें ददरिया ।

✿

गोहार

मोर कमइया बेटा वापिस दे दे न सरकार।
मोर पोसइया बेटा मोला दे दे न सरकार॥
मोर एके झन बेटा रहिस, भाग सिपइहा ओला बनाएवं
बंगला देस के झगरा जामिस, हाए करम मैं ओला गंवाएवं
में हू सियान बहू बिमरहिन, कोन कमावन कहाँ जावन
जम्मो झिन बर आए देवारी, हमन रौंध के काला खावन
बबा फटाका ले दे कहिके बिहनिया ले रोवथें नाती
तहीं बता मोर का देवारी, का दीया का तेल का बाती
झनदे-झनदे खाए के खातिर, हमन तो लाघन रहि जाबो-
नाती बर छुरछुरी मोला दे दे न सरकार।
मोर पोसइया बेटा मोला दे दे न सरकार॥
में हू गरीबहा मनखे भइया, बनि कमा लइका-ला पढ़ाएवं
काम कहूँ मिल जातिस कहिके बाबू भइया ला गोहराएंव
बनी भूति कुच्छु नई मीलिस नौकरी घलो भरती होंगे
देस के रक्षा करहूँ कहिके वो सेना मां भरती होंगे
कतको बेटा मन भुंइया बर जंग लड़िन परलोक सिधारिन
अऊ ये मन सिमला मां ओखर जीते भुंइया ला दे डारिन
मोरो बहू के मांग के सेंदुर, माथ के टिकली ओंट के हाँसी-
जुच्छा हाथ के चूरी मोला दे दे न सरकार।
मोर पोसईया बेटा मोला दे दे न सरकार॥
छे दिन होगे लाँघन हवन, माँग के लाने चाँऊर सिरागे
कोन ला कहँव कहिनी अपन, रोवत-रोवत आँखी पिरागे
बहुरिया के लुगरा घलो, चेंदरी चेंदरी हो गे हवय
मोर संगे बपुरी लईकोरी दुख ला आब्बड़ भोगे हवय
अब सहे नई सकंव मैंह काहीं कुछु खा के मरि जातेंव
ये भगवान उचा लेते मोला ये पीरा ले मैं तरि जातेंव
ये जिनगी ले पार लगे बर, अब तो छाती मां भोंगे बर
पांव परथंव छुरी मोला दे दे न सरकार।
मोर पोसईया बेटा मोला दे दे न सरकार॥

✿

आज नंगा ले हाँसी

तुही मनन समझाहू हमन ला बिचार के ।
कोन पढ़ही भाग ला हमर ये कपार के ॥

रहन परे खेत खार, रहन हे उमंग हो
हाँसी खुसी कुडुक होगे, झरगे हमर रंग हो
जियत हवन अइसन जस उनर हे उधार के ।

जर ला अपन जाँगर के, दे देथन सेठ ला
मिहनत के दू कौरा मिलए नही पेट ला
पीठ तरि चटकत हे पेट हृ बनिहार के ।

अइलाए ओंठ हमर, सुक्कत हे राग जी
अइसन मां जिनगी हर का गावै फाग जी
काछन चघे पीरा नाचए सहर ला गोहार के ।

रोज कमाथन-रोज के खाथन नहि ते रथन लाँघन गा
बेरा ला सुरताए के हमन काखर कर माँगन गा
हमर घर नी आवै कभू दिन हर इतवार के ।

अऊ कतका दिन आधा रहय ये बनिहार के पेट हर
जियए तो इन पेट के खातिर मरए तो इन पेट बर
तुही मन नियाव करव सोंच अऊ बिचार के ।

का होली का फागुन भइया अइसन हमर हाल हे
रंग पछीना-चिखला-माटी, धुर्रा हर गुलाल हे
हमर खातिर जम्मो दिन, हे फागुन तिहार के ।

मंही हमर ठंडई जोंडी पसिया हवै भांग वो
पेट नंगाड़ा मोर हवै तोर चूरी हवै चांग वो
आज नंगाले छिन भर हाँसी जा कऊनो सुखियार के ।

अतल के रोटी पतल के धान

हितवा मन के का पहिचान
कोन अपन हे कोन बिरान
रखवारे खुद खेत ला खा दिस
गाँव ला लीलत हे परधान

अतल के रोटी पतल के धान
धरबे मुसुवा धर बुचि कान

मंझन खोरवा सांझ हे अंधरी
रात बिमरहिन मरे बिहान
देस ह होगे खिदबिद-खिदबिद
कतका भेंड़िया कतेक धसान

अतल के रोटी पतल के धान
धरबे मुसुवा धर बुचि कान

अपन सुवारथ नांव धरम के
अब तो बाँचए नहीं परान
पर बुधिया मन धमना कूदए
हमर सियनहा परे उतान

अतल के रोटी पतल के धान
धरबे मुसुवा धर बुचि कान

रचना मन करगा कस बगरे
मनखे होगें परहर धान
ठकुर गंगा के कोंचिया मन हर
इहाँ लगा लिन अपन दुकान

अतल के रोटी पतल के धान
धरबे मुसुवा धर बुचि कान

ये बस्ती हे भैंरा मन के
कोखर पूछत हवस मकान
हम मन भइगे भात के पुरती
लाल मुहूँ के बेंदरा खाए बीरो पान

अतल के रोटी पतल के धान
धरबे मुसुवा धर बुचि कान

✿

करम के महिमा

दूदिन के जिनगानी ए
दूदिन आनी जानी ए
दूदिन सबो कहानी रे भइया
दूदिन सब मनमानी ए
रोए धोएले भाग नी बदले हाँस खेल अऊ गाले ।
रे पगला, ये जिनगी के डोंगा–
–खेवत–खेवत पार लगाले ॥

जइसे करबे करम, दहाँ तोर वइसे लेख लिखाही
जउन ह जतका मिहनत करही, तऊन ह ओतका पाही
तैं मनखे के जनम धरे अस, जनम ला सुफल बनाले ।
रे पगला, ये जिनगी के डोंगा–
–खेवत–खेवत पार लगाले ।

का साधू का जती संत का सती, राज का रानी
करम के परचा मां लिखे हे सबके राम कहानी
ये लेखा ला बाँच बंचा ले, जगत में नाच नचा ले ।
रे पगला, ये जिनगी के डोंगा–
–खेवत–खेवत पार लगाले ॥

अपन कथन ते आँखी के ओधा मां कपट करत हे
मंधुरस असन, बचन के भितरी, आगी लपट बरत हे
साँचा नइये जगत मां कऊनो, कतकोन किरिया खाले ।
रे पगला, ये जिनगी के डोंगा–
–खेवत–खेवत पार लगा ले ॥

✿

तोर गरब कैलास

बोले नहीं रे भुंइया गा, बोले नहीं रे आकास ।
अपन मरम ला फूल नी बोले, बोले नहीं रे सुबास ।

ये दुनिया के उलटा चलनी,
लंगटा सियनहा होगे
कबरो करनी के भरनी ला,
सिधवा बिचारा भोगे

रंग-रंग के पीतर जरमन माँ का बोले फूल कांस ।

आज लबारी साँच कहावै,
पाप खड़े मेंछरावै
बने ह गिनहा के गुन गावै
पुन्न ह परे ऊँघावै

अत्याचार के भोम्हरा तीपै का बोले चऊमास ।

तोर पसीना हावए अमरित,
बानी तोर बिसवास
ए जुग के तैंहर भागीरथ,
तोर गरब कैलास

तोरे लाए ले गंगा आही तैं झन होवे उदास ।

✿

आखर के देंवता

जुग बदलिस,
जिनिस नैंवा, जोरो तुम साहित माँ
रहि-रहि के झन पीटो
जुन्ना रे डँड़ ।

ओदरावो,
छान्ही के सरहा सब कमचिल ला
अऊ ओमां डारो
अब नैंवा-नैंवा कौंड़ ।

राजा अऊ रानी के
गोठ सबो पछुवा गँ
मन के ये अंगना ला
बने असन धोवौ
भाखा के नंदिया हर
भरे हवै टिपटिप ले
साहित के डोली ला
खेत कस पलोवौ
पहिरावौ भाखा ला,
किसिम-किसिम के लुगरा
जुन्ना सब ओन्हा ला
देवौ जी छाँड़ ।

कलम के निपड़हा मन
उठ बइठव भइया हो
नैंवा सुरुज देवथे
स्याही के नेवता
झूगो तुम,
मोर दुलरी भाखा के बढ़ना हो
बड़दिन माँ जागे हे
आखर के देंवता
बरसन के जामे
सब बेंड़ी ला टोरौ अऊ
खोलौ तुम आज
नैंवा सुरुज के केंवाड़ ।

गंवई के बात

गंवई मां आथे त संगी, जावे तैं ह् मात रे ।
का बतावौं संगी तोला, गंवई के बात रे ॥

लहर लहर लहरावै पुरवहिया ह्
नाचै रे मन के मंजूर
मोगरा महक जाथे बुढ़ती के अंगना मां
पिंवरा बगरै सिन्दुर

गरुवा के रेंगथें बरात रे ।
का बतावौं संगी तोला गंवई के बात रे ॥

संझा मां छान्ही के खपरा के झंझरा ले
गुड्‌ड़-गुड्‌ड़ धुंगिया उड़थे
संझा के बेरा मां पिंवरा तरइया मे
ललहूँ सुरुज घलो बुड़थे

तहाँले फेर हो जाथे रात रे ।
का बतावौं संगी तोला गंवई के बात रे ॥

बिहना के सुरुज ह् दिन के निसेनी ले
ले ले के थेभा उतरथे
संझा मां पिंवरी अंजोर ओगरि जाथे
चन्दा के अमरित बरसथे

चंदैनी खवाथे दूद भात रे ।
का बतावौं संगी तोला गंवई के बात रे ॥

सुमता के डोरी

फागुन हर आगे उड़य गुलाल अऊ अबीर ।
संगी मन जुरिया के गावथें कबीर ॥

झांझ अऊ बंढ़ोरा धूंकय सनन सनन्
जिनगी के गाड़ा रेंगै घनन घनन्
आज सुस्ता ले रे संगी कॉसड़ा ला तीर ।

फागुन के आएले हरियाए हे मन दौना
मॉघ के महीना के होंगे रे गौना
रेसमइहा पुरवाही होवत हे अधीर ।

मोला मिझार ले तैंह आज अपन संग
रंग झन छींच. बुड़ोदें मोला अपन रंग
जिऊ हर एक हो जावै रहय दू सरीर ।

आज सब झगरा के हँड़िया ला फोरौ
सुमता के डोरी ले सब जन ला जोरौ
मन मां मया ला धरौ मन हे मंदिर ।
संगी मन जुरिया के गावयें कबीर ॥

अइवी चऊमास

येती उती आमू पीछू मगन मुचमुचावत ।
बादर हर नाचत हे कनिहा मटकावत ॥

चिरगुन–चिरइया मन सपटे हें छांव मां ।
सावन हर हबरगे हवय हमरो गांव मां ॥

पानी हर टूट परे हवय भरमरा के ।
लइका मन मंजा लेवत हवय करा के ॥

चारों कती हरियाली फरियाए हावय ।
गली–गाँव खार–खेत चिखलाए हावय ॥

गाय गरु आवथें भोम्हरा के नहावन ।
डिपरा मन उल्दत हें डबरी माँ सावन ॥

डबरा मन कनिहा माँ पाए हें अकास ।
गेंड़ी कूदत हावय अइवी चऊमास ॥

✿

भिनसार के गीत

ठोमहा भर घाम धरे आ गइस बिहान ।
रचरच ले टूटगे अंधियार के मचान ।

छर्री-दर्री हो के बगर गे गुलाल ।
पिऊरागे उत्ती, बेरा होगे लाल ।
थपड़ी बजावत हैं पीपर के पान ।
रचरच ले टूटगे अंधियार के मचान ॥

घर-घर में मिहनत के देंवता हर जागे ।
अंगना मां छर्री कस किरन हर छिचागे ॥
धोन्डत हे ब्यारा मां खरही के धान ।
रचरच ले टूटगे अंधियार के मचान ॥

मगन हे किसानिन अऊ झुमरत हे धनहा ।
हँसिया-बासी धर के निकलगे किसनहा ॥
अमरइया गावत हे हाँसए खलिहान ।
रचरच ले टूटगे अंधियार के मचान ॥

❁

संक्षिप्त परिचय –

नाम – : मुकुंद कौशल

जन्म – : ७ नवम्बर १९४७

जन्मस्थान – : दुर्ग (मध्यप्रदेश)

सृजन – : १९६० से

प्रकाशन – : देश–विदेश की लगभग १५० से अधिक पत्र पत्रिकाओं में एवम् अनेक अखबारों में लेख, कहानियां एवम् कविताओं का सतत प्रकाशन

प्रसारण – : –आकाशवाणी के रायपुर केन्द्र से रचनाओं का प्रसारण
–आकाशवाणी के अनुबंधित कवि
–दूरदर्शन के दिल्ली केन्द्र से छत्तीसगढ़ी गीतों का नृत्य नाटिकामय प्रसारण

कैसेट्स – : छत्तीसगढ़ी के अनेक गीत विभिन्न कैसेट्स में संग्रहित

सांस्कृतिक – : –चंदैनी गोंदा, सोनहा बिहान तथा नवा बिहान के लिये गीत लेखन
–छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक पुनर्जागरण में उल्लेखनीय योगदान

अन्तर्राष्ट्रीय उपलब्धि –अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय में अध्ययनार्थ (डा० नरेन्द्र देव वर्मा द्वारा अनूदित) छत्तीसगढ़ी के दस गीत An anthology of Chhattisgadhi Poetries के अंतर्गत संग्रहित
–(१९७८) मद्रास अन्य अधिवेशन में सांस्कृतिक प्रतिनिधि के रूप में कार्य

सम्प्रति – : मार्कंड रिकार्डिंग्स, (आडियो कैसेट्स का व्यवसाय)

सम्पर्क सूत्र – : [illegible] जवाहर चौक दुर्ग (मध्यप्रदेश) 491001

इस संग्रह के बारे में........................

भाई मुकुंद कौशल का छत्तीसगढ़ी लघु काव्य संग्रह "भिनसार" आपके हाथों में है। इन रचनाओं के विषय में कुछ कहना एक मीठी, मुखर और जीवन्त बोली की रचनात्मक शक्ति की निरन्तरता को सलाम करना है। इस मानी में मुकुंद कौशल मात्र एक व्यक्ति नहीं बल्कि सृजन परम्परा की एक कड़ी है।

छत्तीसगढ़ अंचल लेखन, लेखकीय मुद्दों पर संवाद और विचार आन्दोलन की दृष्टि से एक उबलता हुआ इलाका है। बहुत बड़ी मात्रा में रचनाकार यहाँ लिख रहे हैं और निरन्तर संवाद कर रहे हैं। विचारों की द्वंदात्मकता से जो चिन्गारी छिटक रही है उसके प्रकाश में रचना जवान हो रही है। छत्तीसगढ़ी कविता के मुख पर भोलापन और दूध की सोंधी गन्ध भर नहीं है, अब उसकी आँखों में जागरुकता और ओज भी है।

मुकुंद कौशल उस दौर के कवि हैं जहाँ छत्तीसगढ़ी कविता केवल शाब्दिक सौंदर्य लय और ध्वन्यात्मक मिठास तक सीमित नहीं है। लोकसंगीत की गेयता, लोक साहित्य के प्रचलित छन्दों में ढले ग्रामीण अंचल के चित्रों मानवी रुप और मुद्राओं के उजले चित्रों में ही अब बंधी हुई नहीं है इस दौर में वह सामाजिक यथार्थ की कविता बन गई है। अब इसमें राजनैतिक दृष्टि एवं चेतना पनप रही है।

मुकुंद कौशल लम्बे अर्से से लिख रहे हैं। उनकी कविताओं में उभरता चिंतन और उनकी प्रतिबद्धता उन्हें यथार्थवादी काव्यधारा से जोड़ती है। एक ओर जहाँ "मिहनत के सोरा" को मुड़ नँवाने का संदेश उनकी कविता में है वहीं उसमें प्रसन्न चित्र और सौंदर्य के प्रति आकर्षण भी है। वे लोकजीवन के कैनवास पर रचना करते हैं किन्तु उनकी कविता मात्र भाषिक संरचना नहीं है बल्कि प्रगतिवादी विचार आन्दोलन का हिस्सा भी है। भविष्य में वे अपनी रचना में और निखार पैदा करें इस शुभकामना के साथ----

२६ जनवरी १९९६

डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव
(हिन्दी विभागाध्यक्ष)
इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय
खैरागढ़